नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

नवंबर, 2008 वर्ष 13, अंक 11 मूल्य : एक प्रति 0.50 रु. वार्षिक 5.00

भारत में आधुनिक शिक्षा के निर्माता : मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

भारत सरकार ने स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के जन्मदिवस 11 नवंबर को समूचे देश में प्रतिवर्ष राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया है। प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा दिवस समारोह का आयोजन मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विज्ञान भवन नई दिल्ली में 11 नवंबर 2008 को किया गया। इसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने किया। इस अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित *नेहरू ऐंड आज़ाद ऑन 1857* (हिन्दी एवं अंग्रेजी संस्करण) तथा *मौलाना अबुल कलाम आज़ाद : नादिर तहरीरें* (उर्दू) पुस्तक का लोकार्पण भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री अर्जुन सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा *मौलाना अबुल कलाम आज़ाद भारत में आधुनिक शिक्षा के निर्माता* शीर्षक चित्र प्रदर्शनी भी लगाई जिसका औपचारिक उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति महोदया के कर कमलों द्वारा हुआ। इस चित्र प्रदर्शनी में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर मौलाना आज़ाद के चुनिंदा विचारों को प्रस्तुत किया गया, क्योंकि उन्होंने बहुलतावादी, धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील भारत के निर्माण के लिए एक ठोस शैक्षणिक ढांचे की बुनियाद रखने की अत्यंत महत्वपूर्ण शुरुआत की थी। बाद में इस चित्र प्रदर्शनी को राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर 14 से 20 नवंबर 2008 तक आम लोगों के अवलोकनार्थ नेशनल बुक ट्रस्ट कार्यालय परिसर, वसंत कुंज, नई दिल्ली में स्थानांतरित किया गया।

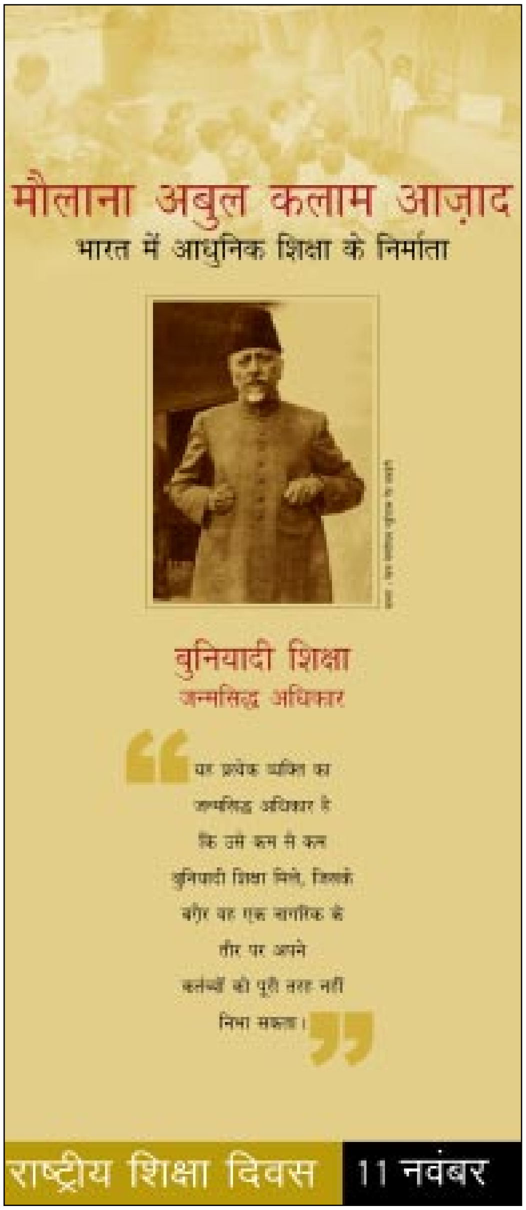

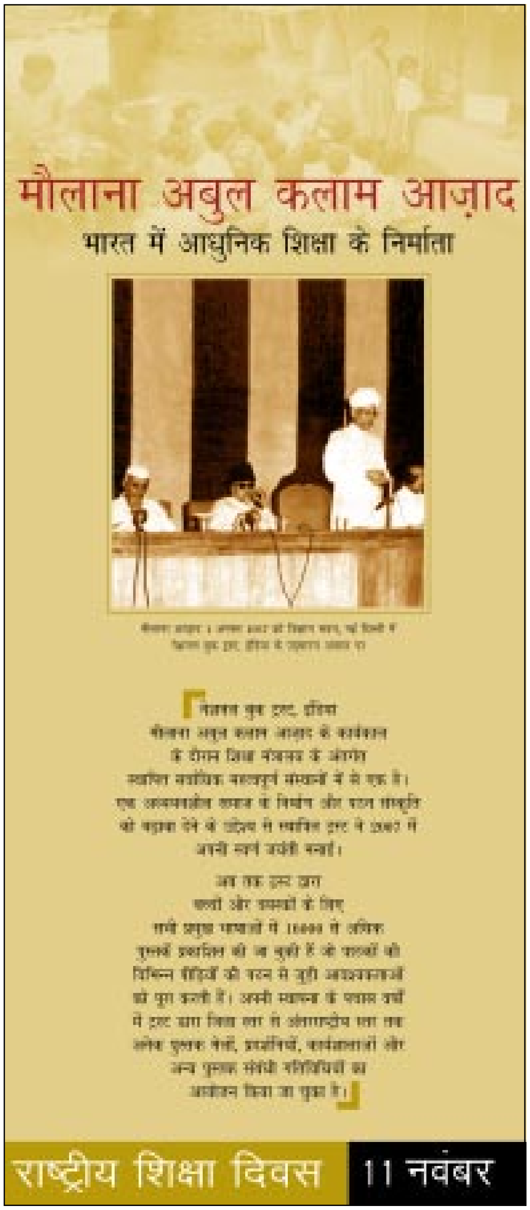

"मुझे हिंदुस्तानी होने पर गर्व है। मैं उस अविभाज्य एकता का हिस्सा हूं जिसे भारतीय राष्ट्रीयता कहते हैं। मैं इस महान इमारत के लिए जरूरी हूं और मेरे बगैर यह शानदार ढांचा अधूरा है। मैं वह आवश्यक तत्व हूं जिससे भारत का निर्माण हुआ है। मैं इस दावे को कभी नहीं छोड़ सकता।"

1940 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का दिया गया अध्यक्षीय भाषण

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह का उद्घाटन

“यह उत्सव पं. जवाहरलाल नेहरू को एक श्रद्धांजलि है जो नेशनल बुक ट्रस्ट के जनक थे और हमें उनके सपनों और मिशन को पूरा करना है,” नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्रा ने सप्ताह भर चलने वाले राष्ट्रीय पुस्तक समारोह का उद्घाटन करते हुए यह कहा। विदित हो कि नेशनल बुक ट्रस्ट के नेहरू भवन, वसंत कुंज, नई दिल्ली स्थित नए कार्यालय परिसर में 14 नवंबर 2008 को उक्त उद्घाटन समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर परिसर में पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

उद्घाटन अवसर पर दाएं से—नुज़्हत हसन, विपिन चन्द्र, दीपा अग्रवाल, क्षमा शर्मा और जगदीश जोशी

प्रो. चंद्रा ने अपने संबोधन में आगे कहा कि देश में पुस्तक पठन संस्कृति के निर्माण में नेहरू जी ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनका जन्मदिन, जो बालदिवस के रूप में मनाया जाता है, हमें समाज में उनके विचारों के प्रसार का एक अवसर भी देता है। उन्होंने कहानियों के महत्व को भी रेखांकित किया और कहा कि, “कहानी हमारे साथ जीवनपर्यंत रहती है।” उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने आधुनिक भारत पर, विशेष रूप से बच्चों के लिए, पुस्तक लिखी ताकि उन्हें हमारे देश के वैभवशाली अतीत के बारे में जानकारी मिल सके।

सप्ताह भर लंबा यह पुस्तकोत्सव सारे देश में मनाया जा रहा है जिसके अंतर्गत ट्रस्ट द्वारा पुस्तक से जुड़े विभिन्न कार्यक्रम, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं और पुस्तक प्रदर्शनियां, विशेष तौर पर बच्चों के द्वारा तथा बच्चों के लिए आयोजित की जाएंगी। यह आयोजन आंध्र प्रदेश, ओड़िसा, गुजरात, बिहार, कर्नाटक, पंजाब, प. बंगाल और उत्तर प्रदेश में हो रहे हैं। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्रा द्वारा पुस्तकालय-सह-प्रलेखन केंद्र के स्वचलीकरण केंद्र का

विपिन चन्द्र द्वारा पुस्तकालय-सह-प्रलेखन केंद्र के स्वचलीकरण केंद्र का उद्घाटन

उद्घाटन भी किया गया। यह केंद्र उपयोगकर्त्ताओं को भारत और विश्वभर की अच्छी और श्रेष्ठ पुस्तकों, संदर्भ सामग्री तथा पत्रिकाओं तक पहुंचने में सहयोग करेगा।

ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़्हत हसन ने अतिथियों का स्वागत किया और जानकारी दी कि ट्रस्ट कार्यालय *नेहरू भवन* के परिसर में आज से आरंभ सप्ताह भर चलने वाले कथावाचन उत्सव, जो विशेष रूप से 6-12 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए है, में 47 स्कूल और विभिन्न स्वयंसेवी संगठन भाग ले रहे हैं। उन्होंने देश भर में ट्रस्ट द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा, “कथावाचन हमारे विचारों को अभिव्यक्त करने का एक जरिया है और हमें विभिन्न गतिविधियों के आयोजन के द्वारा एक आनंददायी अवसर बनाना चाहिए।” इस अवसर पर प्रख्यात लेखक, बुद्धिजीवी और स्कूली बच्चे बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

उद्घाटन-अवसर पर प्रख्यात चित्रकार श्री जगदीश जोशी तथा बाल लेखिकाएं -- सुश्री दीपा अग्रवाल एवं श्रीमती क्षमा शर्मा ने भी अपने-अपने विचार रखे। सुश्री दीपा अग्रवाल ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में पुस्तकों के प्रकाशन तथा उसके प्रोन्नयन हेतु नेशनल बुक ट्रस्ट को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कहानी सुनाने के जरिए पूरे विश्व स्तर पर हम एक-दूसरे से जुड़ते हैं तथा एक-दूसरे की संस्कृति के बारे में जानते हैं। कहानियों के जरिए हम एक-दूसरे को अपने विचार भी बांटते हैं। कथावाचन के द्वारा बच्चों में भी कहानी सुनने की कला का विकास होता है।

बाल लेखिका व ‘नंदन’ पत्रिका की कार्यकारी संपादक श्रीमती क्षमा शर्मा ने नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा की और कहा कि बच्चों में नई कहानियों को जानने के प्रति उत्सुकता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बच्चों की भावनात्मक अभिव्यक्तियां जैसे खुशी, उदासी, उनका अकेलापन--ये सभी किसी कथाकार को कहानी लिखने में सहायता करती हैं।

इस अवसर पर वरिष्ठ चित्रकार श्री जगदीश जोशी ने कहा कि एक

सिट ऐंड ड्रा प्रतियोगिता में भाग लेते स्कूली बच्चे

चित्रकार किसी पुस्तक का अहम हिस्सा होता है और वह किसी पुस्तक की खूबसूरती के लिए महत्वपूर्ण होता है।

कार्यक्रम का समापन ट्रस्ट के एक अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। संचालन श्री द्विजेन्द्र कुमार ने किया।

निदेशक की कलम से......

फ्रैंकफर्ट बुक फेयर 2006 में भारत को अतिथि देश का दर्जा दिया गया और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया को इसके लिए नोडल एजेंसी के रूप में नामांकित किया गया। जिस तरह से अतिथि देश के अनुभव की स्मृतियां विभिन्न सहभागियों के मनसपटल पर नए स्वरूपों में अंकित हुई है, यह एक हर्ष का विषय है। जहां एक ओर विदेश मंत्रालय ने भारतीय प्रकाशन पर केंद्रित अपनी पत्रिका *इंडिया पर्सपेक्टिव* (सितंबर-अक्तूबर 2008 अंक) का लोकार्पण फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के स्टॉल पर किया, वहीं दूसरी ओर फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला अपने नई दिल्ली स्थित जर्मन बुक ऑफिस (जिसकी स्थापना भारत के अतिथि देश के सफल कार्यक्रमों के बाद हुई) के द्वारा भारतीय प्रकाशकों के सहयोग से भारत पर केंद्रित कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, 2010 में जर्मनी को अतिथि देश का दर्जा दिया गया। इसके पूर्व नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले के सहयोग से जनवरी 2008 में अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों के सम्मेलन *प्रोफेशनल पब्लिशिंग इन एशिया* का आयोजन कर चुका है और 2009 में इसकी दूसरी आवृत्ति की तैयारी चल रही है। फ्रैंकफर्ट बुक फेयर 2008 से मिल रहे संकेतों से पता चलता है कि अंतरराष्ट्रीय पुस्तक व्यापार में भारत की उपस्थिति और भारत में वैश्विक प्रकाशक बिरादरी की अभिरुचि उत्तरोत्तर बढ़ रही है। 22वें अंतरराष्ट्रीय स्वत्त्वाधिकार निदेशक सम्मेलन में महत्वपूर्ण केस स्टडी में से एक ब्राजील, रूस, चीन और भारत के मद्देनजर *अंग्रेजी भाषा के अधिकारों की गैर-अंग्रेजी भाषाओं में विक्री* की प्रस्तुति की गई। इस सम्मेलन में एक भागीदार के रूप में मैं भी उपस्थित रही। फ्रैंकफर्ट बुक फेयर 2008 में भारतीय पुस्तकों के समेकित प्रदर्शनी का आयोजन करते हुए एन.बी.टी. ने महात्मा गांधी पर और उनकी कृतियों के *विवरणात्मक स्वत्त्वाधिकार पुस्तिका* को भी प्रस्तुत किया। *शब्द और कर्म में* नामक इस पुस्तिका में विदेशी प्रकाशकों की अच्छी अभिरुचि देखी गई। नेशनल बुक ट्रस्ट ने आगामी नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में वहां के सभी प्रतिभागियों को भी आमंत्रित किया है।

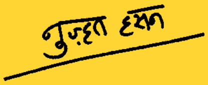

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह (14 से 20 नवंबर 2008) के अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट परिसर में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद पर केंद्रित चित्र प्रदर्शनी का आयोजन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भोजपुरी भाषा और साहित्य

भोजपुरी, मारीशस और भारत के बीच सेतु का काम करेगी। भारत में भोजपुरी के लिए अभी बहुत कुछ करना शेष है। मेरे परदादा यानी चार पुश्त पहले मेरे पूर्वज भारत से मारीशस गए थे पर आज भी वहां भोजपुरी जीवित है। मारीशस से जाकर इंग्लैंड और अमेरिका में बसे लोगों ने भी भोजपुरी नहीं छोड़ी है। मेरे पूर्वज बिहार के आरा जिला से ही गए थे, जहां के बारे में प्रसिद्ध है कि ''आरा जिला घर बा त कवना बात के डर बा।'' —ये विचार भारत में मारीशस के उच्चायुक्त श्री मुखेश्वर चुन्नी ने नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा पिछले 18 अक्तूबर 2008 को पटना में आयोजित *भोजपुरी भाषा और साहित्य* विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि भाषा का गहरा संबंध संस्कृति से होता है। भोजपुरी मरेगी तो हमारी संस्कृति भी मर जाएगी। तमाम दबावों के बीच इसे बचाए रखना है।

उद्घाटन अवसर पर भारत में मॉरीशस के उच्चायुक्त महामहिम श्री मुखेश्वर चुन्नी (बीच में) तथा अन्य विशिष्ट अतिथि

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रखर मेधा के प्रतीक पुरुष डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि भोजपुरी सही मायने में अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। भारत में इसे अभी तक मान्यता नहीं मिलना दुःखद है। भोजपुरी के विकास से हिन्दी को बल मिलेगा।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नंदकिशोर नवल ने कहा कि भोजपुरी में स्तरीय साहित्य रचा जा रहा है। इस भाषा का तद्भवीकरण हिन्दी, बांग्ला की तुलना में अधिक हुआ है। इसके पास जनशक्ति की बड़ी ताकत है। इसका भविष्य उज्ज्वल है। प्रो. बहाब अशरफी ने कहा कि भोजपुरी करोड़ों लोगों की मातृभाषा है। इसे अविलंब संवैधानिक मान्यता मिलनी चाहिए। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद के निदेशक प्रो. रामबुझावन सिंह ने कहा कि भोजपुरी, मगही जैसी भाषाओं के विकास से हिन्दी समृद्ध होगी। ये भाषाएं हिन्दी के लिए प्राणवायु का काम करती हैं। इन्हें बचाना होगा। विशिष्ट अतिथि प्रो. अब्दुस्समद ने कहा कि किसी भाषा का किसी भाषा से टकराव नहीं है। भोजपुरी भाषा एक बड़े जनसमुदाय का प्रतिनिधित्व करती है।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में तीन विषयों *(भोजपुरी भाषा का इतिहास, भोजपुरी का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप* तथा *भोजपुरी गद्य की जरूरत और स्थिति)* पर विचार-विमर्श हुआ। डॉ. जयकांत सिंह 'जय' ने *भोजपुरी भाषा का इतिहास* पर अपने आलेख में दावा किया कि भोजपुरी वैदिक संस्कृत से निकली हुई भाषा है।

प्रथम सत्र के सहभागी वक्तागण

चौरंगीनाथ, गोरखनाथ, कबीर सहित सभी निर्गुण संतों की वाणी भोजपुरी में है। इसी विषय पर बोलते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने कहा कि भोजपुरी लंबे समय से जनसाधारण की भाषा रही है। इसमें अरबी, फारसी, तुर्की के साथ-साथ द्रविड़ परिवार की भाषाओं के बहुतेरे शब्द मिलते हैं।

डॉ. अरुणेश नीरन और डॉ. प्रभुनाथ सिंह ने *भोजपुरी का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप* विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. नीरन ने अपने आलेख में भोजपुरी के भाषिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक शक्ति को उजागर किया। जबकि डॉ. प्रभुनाथ सिंह ने अपने आलेख में भोजपुरी के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप को सींचने की जरूरत को दर्शाते हुए कहा कि मारीशस, फिजी, गुयाना, हालैंड, सूरीनाम आदि देशों में भोजपुरी अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है।

भोजपुरी गद्य की जरूरत और स्थिति विषय पर प्रो. रामदेव शुक्ल, श्री महेन्द्र प्रसाद सिंह तथा डॉ. आशारानी लाल ने अपने आलेख पढ़े। प्रो. रामदेव शुक्ल ने कहा कि भोजपुरी गद्य में हर तरह के भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता है। श्री महेन्द्र प्रसाद सिंह ने भोजपुरी गद्य को समृद्ध बताते हुए कहा कि भोजपुरी में लिखे गए नाटक प्रभावी होते हैं। डॉ. आशारानी लाल ने कहा कि नारी विमर्श जैसे जटिल विषय पर भोजपुरी गद्य में सटीक अभिव्यक्ति हो रही है। प्रथम सत्र की अध्यक्षता भोजपुरी के वयोवृद्ध लेखक श्री पाण्डेय कपिल ने की।

संगोष्ठी का दूसरा सत्र ढाई बजे से प्रख्यात आलोचक डॉ. मैनेजर पाण्डेय की अध्यक्षता में शुरू हुआ। इस सत्र में भी तीन विषयों *(भोजपुरी साहित्य का इतिहास, भोजपुरी में सर्जनात्मक और अनूदित साहित्य की स्थिति* तथा *भोजपुरी पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति)* पर गंभीर आलेख पढ़े गए।

भोजपुरी साहित्य का इतिहास विषय पर डॉ. तैयब हुसैन, प्रो. ब्रजकिशोर तथा श्री कृष्णानंद कृष्ण ने अपने-अपने आलेख पढ़े। डॉ. हुसैन ने अपने आलेख में भोजपुरी साहित्य को जन-साहित्य बताते हुए कहा कि इसमें कबीर, भिखारी ठाकुर, राहुल सांकृत्यायन, महेन्द्र शास्त्री, गोरख पाण्डेय, विजेन्द्र अनिल जैसे कई लेखक हुए, जिन्होंने जन-भावनाओं को अभिव्यक्ति दी है। प्रो. ब्रजकिशोर ने अपने आलेख में भोजपुरी साहित्य की प्रवृत्तियों को रेखांकित करते हुए बताया कि भोजपुरी साहित्य सम-सामयिक घटनाओं से प्रभावित होता रहा है। 1775 के आसपास अंग्रेजों के खिलाफ हुए फतेहबहादुर शाही के संघर्ष पर इतिहास की नजर बाद में पड़ी, भोजपुरी साहित्य में इस पर पहले लिखा गया। श्री कृष्ण ने अपने आलेख में भोजपुरी साहित्य के काल विभाजन एवं नामकरण की समस्या पर विचार किया।

भोजपुरी में सर्जनात्मक और अनूदित साहित्य की स्थिति विषय पर श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह ने अपने आलेख में बताया कि भोजपुरी में सर्जनात्मक साहित्य के लेखन की स्थिति उत्साहजनक है, हर विधा में रचनाएं हो रही हैं। भोजपुरी रचनाओं का इतर भाषाओं तथा इतर भाषाओं से भोजपुरी में अनुवाद हो रहा है, परंतु इसमें और तेजी लाने की जरूरत है।

भोजपुरी पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति विषय पर दो आलेख पढ़े गए। पहला आलेख भोजपुरी के वयोवृद्ध लेखक श्री पाण्डेय कपिल का था जबकि दूसरा

द्वितीय सत्र में वक्तव्य देते हुए जीतेन्द्र वर्मा

आलेख युवा लेखक डॉ. जीतेन्द्र वर्मा ने प्रस्तुत किया। श्री कपिल ने अपने आलेख में भोजपुरी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन तथा उसके बंद होने का विवरण दिया जबकि डॉ. वर्मा ने भोजपुरी पत्रिकाओं की प्रवृत्ति का विश्लेषण करते हुए विदेशों से निकलने वाली भोजपुरी पत्रिकाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति तथा समाज की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि कबीर भोजपुरी के आदि कवि थे। उन्होंने अपनी मातृभाषा भोजपुरी में कविता कही। उनके शिष्य विभिन्न भाषा-भाषी थे। उन्होंने उनकी वाणी को संकलित किया, जिससे विभिन्न भाषा के शब्द उनकी वाणी में आ गए।

संगोष्ठी के विषयों का विवेचन करते हुए डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि यह जरूरी नहीं है कि भोजपुरी साहित्य के इतिहास में काल विभाजन, प्रवृत्ति आदि हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधार पर हो। भोजपुरी साहित्य के इतिहास लेखकों को चाहिए कि वे अपनी मौलिक दृष्टि विकसित करें। अनुवाद से भोजपुरी की शक्ति से और लोग परिचित होंगे। भोजपुरी में दो तरफा अनुवाद की जरूरत है। इसमें और तेजी लाई जानी चाहिए। भोजपुरी में अनेक पत्र-पत्रिकाएं निकल रहीं हैं। अब इस भाषा में एक अखबार निकालने की जरूरत है। इससे भोजपुरी की अभिव्यक्ति क्षमता का ज्ञान होगा।

सभागार में उपस्थित बुद्धिजीवी, साहित्यकार व मीडिया के लोग

आगत अतिथियों का स्वागत ट्रस्ट के सलाहकार श्री मंगलेश डबराल तथा संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री कमाल अहमद ने किया। इस अवसर पर प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा स्थानीय साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही।

—उमा कुमारी

पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण कार्यक्रम

मुझे यह कार्यक्रम पसंद है और आम तौर पर ऐसे प्रशिक्षण पाठ्यक्रम बाजार में उपलब्ध नहीं हैं। यह प्रतिभागियों के लिए निस्संदेह सहायक है।—जोया (सइदा तौइर फातिमा)

मुझे लगता है कि गुणवत्ता और विषय-वस्तु के दृष्टिकोण से यह एक साल के प्रशिक्षण कार्यक्रम के समतुल्य है। इसे जारी रखें!—के. चलपति राव

ये 10-23 सितंबर 2008 के दौरान हैदराबाद में आयोजित पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति कुछ सुधी जनों की प्रतिक्रियाएं थीं। इसका आयोजन ट्रस्ट ने लिटरेसी हाउस, आंध्र महिला सभा के सहयोग से किया।

ट्रस्ट द्वारा पुस्तक प्रकाशन के इस आयोजन में लगभग 40 लोगों को भाग लेने का सुनहरा अवसर मिला। इनमें कई पहले से रोजगाररत हैं।

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद के पूर्व कुलपति प्रो. आर.वी.आर. चंद्रशेखर राव ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। एस.के. विश्वविद्यालय, अनंतपुर के पूर्व कुलपति प्रो. वाई सरस्वती राव विशिष्ट अतिथि थे और उद्घाटन समारोह के अवसर पर रत्न सागर पब्लिशर्स के सलाहकार तथा हमारे संकाय के एक सदस्य श्री श्रीधर बलान विशेष तौर पर आमंत्रित थे। न्यायमूर्ति एस.वी. मारुति (सेवानिवृत्त), अध्यक्ष, लिटरेसी हाउस ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. आर.वी.आर. चंद्रशेखर राव ने ट्रस्ट के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इस क्षेत्र में इस प्रकार के नए प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन के लिए उसकी प्रशंसा की। उन्होंने आशा व्यक्त किया कि इसमें प्रशिक्षण के इच्छुक वे उदीयमान लेखक और प्रकाशक अवश्य लाभान्वित होंगे जिन्होंने इसमें नामांकन करवाया है।

श्री श्रीधर बलान ने प्रकाशन जगत पर अपने विचार रखते हुए देश में इसके जबरदस्त विकास की संभावना को रेखांकित किया। विषय विशेषज्ञों के रूप में कुछ प्रमुख प्रकाशन घरों से श्री जी.एस. जॉली, सुश्री मालविका गुहा मुस्तफी, सुश्री शर्मीला अब्राहम, सुश्री अपराजिता बसु, श्री सुबीर राय, श्री कल्याण बनर्जी, श्री एन.के. भट्टाचार्जी, श्री सुकुमार दास और श्री जोसफ मथाई उपस्थित हुए।

23 सितंबर 2008 को समापन समारोह हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे श्री मंडाली बुद्ध प्रसाद जो आंध्रप्रदेश सरकार में पशुपालन, डेयरी विकास, पशु चिकित्सा एवं मत्स्य पालन (विश्वविद्यालय) मंत्री हैं। अपने भाषण में उन्होंने आंध्र प्रदेश के अन्य जिलों में ऐसे आयोजन करने की अपील की ताकि अन्य जिलों के युवा भी हैदराबाद के युवा समूह के समतुल्य योग्यता हासिल कर सके। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के प्रमाण पत्र भी दिए। ईएमईएससीओ पब्लिकेशंस के प्रबंध निदेशक श्री विजय कुमार ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री सुमित भट्टाचार्जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

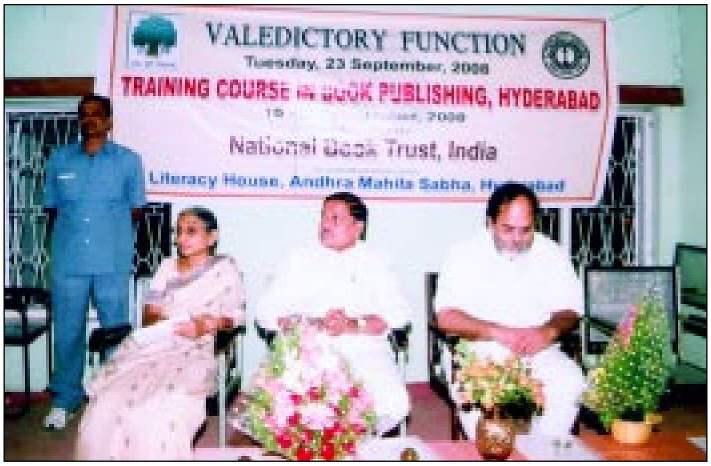

समापन अवसर पर बाएं से—श्रीमती सीताराम भाई, श्री मंडाली बुद्ध प्रसाद और श्री विजय कुमार

गोलाघाट पुस्तक मेला

''हिंसा और घृणा का संदेश देने वाले कभी भी मानवता के मित्र नहीं हो सकते हैं। मुझे इस बात की खुशी है कि आज जबकि हमारे प्रांत के कुछ हिस्सों में लोग 'खून' की होली खेल रहे हैं नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने ज्ञान और बुद्धिमत्ता का संदेश देने में संलग्न है,'' ये शब्द हैं सुप्रसिद्ध साहित्यकार और असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. नगेन सैकिया का जो उन्होंने गोलाघाट पुस्तक मेले के उद्घाटन के अवसर पर कहे। नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा गोलाघाट साहित्य सभा, गोलाघाट जिला प्रशासन और ऑल असम पब्लिशर्स एंड बुक सेलर्स एसोसिएशन के सहयोग से जेनरल फील्ड गोलाघाट में 17 अक्तूबर से 25 अक्तूबर 2008 को मेले का आयोजन किया गया। अधिक-से-अधिक असमी साहित्यिक कृतियों के अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए जोरदार अपील करते हुए डॉ. साकिया ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि इस दिशा में एनबीटी की अगुवाई उल्लेखनीय है और रहेगी।

उद्घाटन अवसर पर बाएं से—पुण्येश्वर पुजारी, अजीत बरुआ, नगेन सैकिया, पी.के. सलोई और प्रशांत डेका

उद्घाटन समारोह में उपस्थित गणमान्य लोगों में डॉ. अजीत बरुआ, श्री पुण्येश्वर पुजारी और श्री प्रदीप चंद्र सलोई विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इससे पहले माननीय लोक निर्माण कार्य मंत्री श्रीमती अजंता नियोग ने हरी झंडी दिखा कर 1500 स्कूली बच्चों और स्थानीय एनजीओ और स्वसहाय समूहों के सदस्यों की प्रातःकालीन पुस्तक यात्रा का शुभारंभ किया। इस अवसर पर गोलाघाट जिला प्रशासन के उपायुक्त श्री डी.एन. मिश्रा भी उपस्थित थे।

नौ दिवसीय पुस्तक मेले में असम, दिल्ली और कोलकाता के नामी प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं के 115 स्टॉल लगे और उन पर गोलाघाट और आसपास के पुस्तक प्रेमियों की भीड़ उमड़ पड़ी।

मेले के दौरान परस्पर वैचारिक आदान-प्रदान की कई बेहद प्रासंगिक गोष्ठियों का आयोजन किया गया। इनके विषय इस प्रकार थे : जनसंचार एवं पुस्तक पठन, नई सहस्त्राब्दी के आरंभ में असमिया कहानी, साहित्यिक अनुवाद में अनुवादकों की स्वतंत्रता की रूपरेखा की परिभाषा, और असमिया नाट्य कला पर विविध विचार। लेखन, अनुवाद, आलोचना, संपादन, विज्ञान और रंगकर्म जैसी विविध विधाओं से जुड़े लोगों की इन गोष्ठियों में भागीदारी देखी गई। बिल्कुल नियत तिथि और समय पर आयेजित इन गोष्ठियों में हरेकृष्ण डेका, अरुपा पतंगिया कलिता, डॉ. निराजना एम. बेजबोरा, मैनी महंता, डॉ. अरुप बर्थाकुर, रफीकुल हुसैन, बहरुल इस्लाम, प्रफुल्ल बोरा, डॉ. दिनेश चंद्र गोस्वामी, डॉ. पद्मेश्वर गोगोई, केशव साइकिया और अमृत ज्योति महंता की भागीदारी उल्लेखनीय रही। 'लेखक से मिलें' कार्यक्रम में सुधी पाठकों ने अनुराधा सरमा पुजारी और डॉ. लक्ष्मीनंदन

बोरा जैसे गणमान्य लेखकों के सामने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। हालांकि जिस सहज भाव से दोनों ने जवाब दिए वह सचमुच प्रभावित कर गया।

बच्चों के लिए नाना प्रकार के आयोजन किए गए जैसे 'बैठो और चित्र बनाओ', प्रश्नोत्तरी, पत्र लेखन, कथा वाचन, कविता पाठ, आशु भाषण, स्पेलिंग बी और खजाने की खोज। इनमें बच्चों की संख्या और उनका उत्साह देखकर न केवल मां-बाप और शिक्षक बल्कि मेले का हर आगंतुक हैरत में रह गया। स्पेलिंग बी और 'मौचाक' के संपादक डॉ. शांतनु तमुली के साथ अंतरंग बातचीत में सभी इतने तल्लीन हो गए कि यह कार्यक्रम लगभग पूरे दिन चलता रहा। उल्लेखनीय है कि मौचाक मामा नाम से प्रसिद्ध डॉ. शांतनु को आटोग्राफ लेने वालों की कैद

से किसी प्रकार आजाद कराना पड़ा। बच्चों की उमड़ती भीड़ और बाल मंडप में जगह की कमी के मद्देनजर उनकी अधिकांश गतिविधियों का आयोजन खुले आडिटोरियम में करना पड़ा। हरेक बच्चे को उसके हिस्से का समय मिले इसके लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं नियत समय के बाद देर तक चलती रहीं।

पुरस्कार वितरण और विदाई समारोह के साथ यह शानदार समारोह 25 अक्तूबर को समाप्त हो गया। विदाई समारोह पर मुख्य अतिथि थीं अस्सी के दशक में पांव रख चुकीं श्रीमती आरती साइकिया जो न केवल सुप्रसिद्ध साहित्यकर्मी हैं बल्कि एक समाजसेविका भी रही हैं। गोलाघाट साहित्य सभा ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ पूरे समारोह का भव्य समापन किया। इसमें असम की समेकित संस्कृति और युगों से चली आ रही सौमनस्य के भाव देखे जा सके।

मेले की अभूतपूर्व सफलता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि आगंतुकों एवं श्रोताओं का एक विशाल समूह विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान खड़ा रहा क्योंकि यह अभूतपर्वू भीड़ एनबीटी की कल्पना से परे थी। खुले आडिटोरियम में रखी 300 कुर्सियां बहुत कम साबित हुई। हालांकि गोलाघाट साहित्य सभा के प्रतिबद्ध स्वयंसेवियों ने व्यवस्था में जो तत्परता दिखाई वह सराहनीय है। गोलाघाट पुस्तक मेले के प्रचार-प्रसार में इन लोगों की भूमिका हरेक दृष्टिकोण से प्रशंसनीय रही। उनके अतिरिक्त संपूर्ण जिला प्रशासन और विशेष कर पुलिस बल की तैनाती भी आज के परिवेश को देखते हुए सचमुच महत्वपूर्ण थी।

समापन अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमती आरती सैकिया व अन्य विशिष्टजन

कोलंबो अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

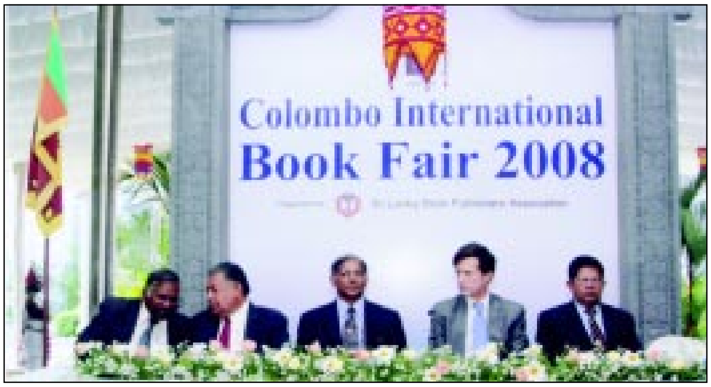

''ज्ञानवर्द्धन हेतु प्रतिबद्धता के 10 वर्ष'' को प्रदर्शित करता 10वां कोलंबो पुस्तक मेले का भव्य शुभारंभ हुआ। 50 विदेशी प्रकाशकों और 470 स्टॉल के साथ यह हर लिहाज से अभूतपूर्व था। अधिक व्यवस्थित भी। श्रीलंका का पुस्तक महाकुंभ कहा जाने वाला सीआईएफबी में हर बार लाखों पुस्तक प्रेमियों की भीड़ जुटती है और मेले का नारा यह कहता है– ''आपकी प्रतीक्षा में लाखों पुस्तकें।''

''श्रीलंका समाज में कोलंबो पुस्तक मेले की अहमियत ने इसे पाठकों और लेखकों का जन मंच बना दिया है मैं इसे अपनी आकांक्षाओं और प्रतिबद्धता की परिणति मानता हूं,'' कहना था श्री रंजीत समरनायके का जो श्रीलंकन बुक पब्लिशर्स एसोएिशन के अध्यक्ष हैं। कभी पुस्तक विक्रेताओं का बाजार कहा जाने वाला सीआईबीएफ ने पिछले एक दशक में खस्ताहाल श्रीलंकाई प्रकाशन जगत को नवजीवन देने और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नए और उद्यमशील प्रकाशक न केवल दुनिया भर की पुस्तकों का सिंहला अनुवाद प्रकाशित कर रहे हैं बल्कि लेखकों की नई पौध को तैयार करने में भी सफल रहे हैं। नई पीढ़ी के ये लेखक सिंहला के साथ-साथ अंग्रेजी में भी लिख रहे हैं।

भारतीय पुस्तक उद्योग के पांव जमे हुए हैं। इसका श्रेय यहां भारतीय पाठ्यपुस्तकों और शैक्षिक पुस्तकों की लोकप्रियता को जाता है। परंतु आज भी एक कमी खलती है और वह है सह-प्रकाशन के नए-नए आयामों की तलाश जिसके तहत छोटे और स्वतंत्र प्रकाशकों के साथ हाथ मिलाया जा सके। इस लिहाज से विशेष कर बच्चों की और सामान्य पुस्तकों की संभावना को नहीं नकारा जा सकता है। दोनों देशों के प्रकाशक ऐसे किसी प्रयास से बहुत लाभान्वित होंगे।

दूसरा क्षेत्र अनुवाद का हो सकता है जिसमें भारतीय कृतियां सिंहला संस्करणों में प्रकाशित हो पाएंगी। इससे एक बड़ा सिंहला पाठक वर्ग आकर्षित होगा। इस सिलसिले में कहना जरूरी है कि नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के पिछले कुछ वर्षों के प्रयास से ट्रस्ट के ही कुछ प्रकाशनों का सिंहला अनुवाद हो पाया है। चिदानंद दासगुप्ता की पुस्तक *द सिनेमा ऑफ सत्यजीत राय* का सिंहला अनुवाद इसी प्रयास का परिणाम है। इस पहल के परिणामस्वरूप कई अन्य पुस्तकें प्रकाशित हुई जैसे *द महात्मा एंड द पोएट* (सव्यसाची भट्टाचार्य द्वारा संकलित); *इंडिया हिस्टारिकल बिगनिंग्स एंड द कांसेप्ट ऑफ आर्यन* (रोमिला थापर एवं अन्य); *द पास्ट एंड प्रिज्यूडिस* (रोमिला थापर); *डेवलपमेंट विद डिग्नीटी* (अमित भादूड़ी); *ग्लोबलाइजेशन ऐंड डेवलपमेंट* (सुनंदा सेन); *वीमेन हू डेयर्ड* (संपा. रितु मेनन); और *ट्रैडिशनल इंडियन थिएटर* (कपिला वात्स्यायन)।

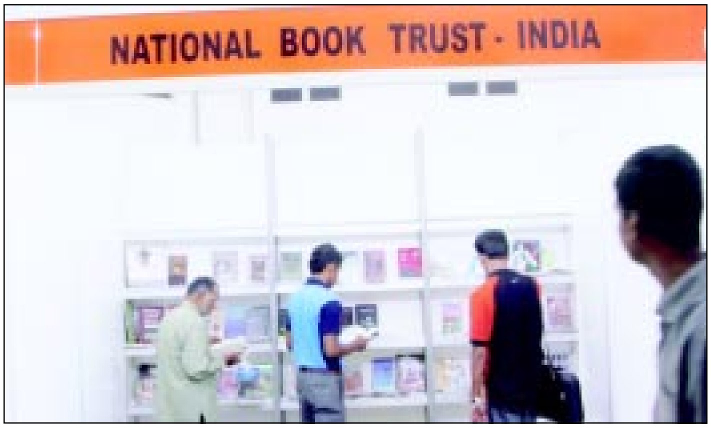

श्रीलंका पुस्तक प्रकाशक परिसंघ द्वारा आयोजित 10वें सीआईबीएफ का उद्घाटन 20 सितंबर 2008 को बीएमआईसीएच कन्वेंशन ऐंड एग्जीवीशन सेंटर, कोलंबो में श्री रॉबर्ट ओ ब्लेक द्वारा किया गया जो श्रीलंका में अमेरिकी राजदूत हैं। कोलंबो विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के डीन प्रो. एस. संदेरसेगरम मुख्य अतिथि थे। इस मेले का आयोजन 20-28 सितंबर 2008 के दौरान किया गया था।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2006-08
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2006-08
Mailing date 15/16

ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें

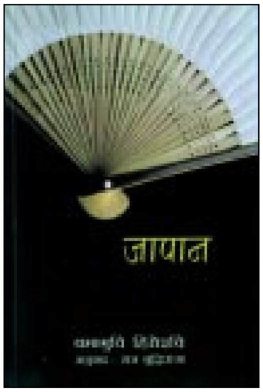

जापान
यमागुचि हिरोइचि अनुवाद : *राज बुद्धिराजा*
पृ. 176 रु. 70.00

जल भीतर इक बृच्छा उपजै
रमेश अनुपम (सं.)
पृ. 300 रु. 120.00

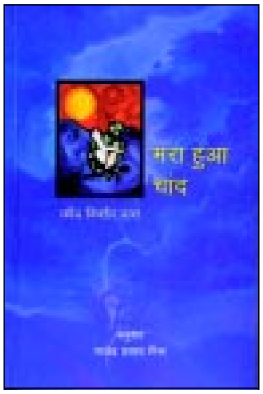

मरा हुआ चांद
उपेंद्र किशोर दास
पृ. 92 रु. 50.00

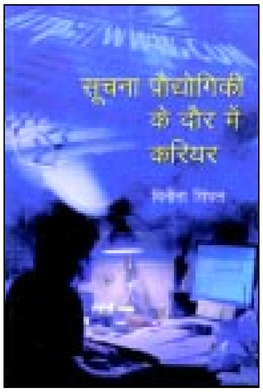

सूचना प्रोद्यौगिकी के दौर में करियर
विनीता सिंघल
पृ. 150 रु. 55.00

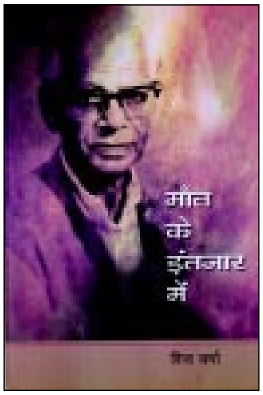

मौत के इंतजार में
शिव वर्मा
पृ. 94 रु. 40.00

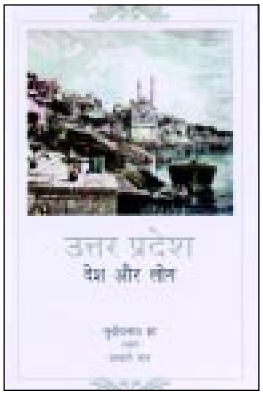

उत्तर प्रदेश
सुबोधनाथ झा अनुवाद : *बनवारी लाल*
पृ. 186 रु. 70.00

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक
देवशंकर नवीन
कार्यकारी संपादक
कमाल अहमद
उत्पादन सहयोग
प्रवीण कुमार कपिल

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से श्रीमती नुज़्हत हसन द्वारा एस.एस. इंटरप्राईजेज, प्रथम तल, 10/8020 मुलतानी ढांढ़ा, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 से टाईपसेट तथा अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, डब्ल्यू-30, ओखला फेज II, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित एवं ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016 से प्रकाशित।